सामाजिक परिवर्तन के कारक या कारण

(Factors or Agents or Causes of Social Change)

समाजशास्त्रियों, समाज मनोवैज्ञानिकों एवं मानवशास्त्रियों ने मिलकर कुछ उन कारकों पर प्रकाश डाला है। जिनसे सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न होते हैं। तथा जिनसे उनके स्वरूप को समझने में काफी मदद भी मिलती है। समाज गतिशील है और समय के साथ परिवर्तन होता है। आधुनिक समय में संसार में प्रत्येक क्षेत्र में विकास हुआ है तथा विभिन्न समाजों ने अपने तरीके से इन विकासों को समाहित किया है, जो सामाजिक परिवर्तन में परिलक्षित है। इन परिवर्तनों की गति कभी तेज होती है कभी मंद। कभी-2 ये परिवर्तन अति महत्वपूर्ण होते हैं तो कभी बिलकुल महत्वहीन। ऐसे में कारकों को सामाजिक परिवर्तन का एजेन्ट भी कहा जाता है। ऐसे कारको में प्रमुख कारक निम्न हैं :—

(i) जैविक कारक (Biological factors)

(ii) भौतिक कारक (Physical factors)

(iii) प्रौद्योगिकी कारक – (Technological factors)

(iv) आर्थिक कारक (Economic factors)

(v) सांस्कृति कारक (Cultural (factors)

(vi) शैक्षिक कारक (Educational factors)

(vii) मनोवैज्ञानिक कारक (Psychological factors)

(viii) राजनैतिक कारक (Political factors)

(i) जैविक कारक :– जैविक कारकों में उन कारकों को रखा जाता है जिससे मानव जाति का विकास पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रभावित होते रहता है। इसमें अनुवांशिकता प्रमुख बतलाया गया है। मानव समाज में जैविक कारकों का प्रभाव जनसंख्या में वृद्धि, पुरुष नारी अनुपात आदि में मुख्य रूप से लक्षित होता है। जनसंख्या में वृद्धि होने से सामाजिक-आर्थिक स्तर में गिरावट आती है और उससे महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन आ सकता

है। उसी तरह पुरुष नारी अनुपात में एक निश्चित संतुलन किसी कारण से नहीं रह पाता है, तो इससे भी महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन जो मूलतः शादी से संबंधित हो सकते हैं, उत्पन्न हो सकता है। जैसे -

यदि पुरुष की तुलना में स्त्रियों की संख्या काफी घट जाए, तो उम्मीद की जाती है, भारतीय समाज से दहेज प्रथा स्वयं ही समाप्त हो जाए। इतना ही नहीं जनसंख्या में वृद्धि हो जाने से सामाजिक मूल्य में भी परिवर्तन आ जाता है। मैकाइवर तथा पेज के अनुसार - जैविक कारकों का प्रभाव सामाजिक मूल्यों पर इतना स्पष्ट पड़ता है कि इससे सामाजिक परिवर्तन में स्पष्ट तीव्रता आती है। परिणामतः विश्वासों, मूल्यों, रीति - रिवाजों एवं मानकों में स्पष्ट परिवर्तन घटित हो जाती है।

(ii) भौतिक कारक :- इस कारकों में भौगोलिक या भौतिक वातावरण से संबंधित कारक आते हैं। और उनसे सामाजिक परिवर्तन होता है। जैसे - बाढ़, भूकम्प, अकाल, महामारी, युद्ध आदि कुछ ऐसे भौतिक कारण हैं जिनसे महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न हो जाते

है। इतिहास साक्षी है कि फ्रेन्च क्रांति के बाद फ्रांस में आये सामाजिक परिवर्तन, भारत में, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आये सामाजिक परिवर्तन, हिरोशीमा तथा नागासकी में एटम बम गिरने के बाद का सामाजिक परिवर्तन इस भौतिक कारक से उत्पन्न सामाजिक परिवर्तन के उदाहरण है। युद्ध के अलावा, बाढ़ भूकम्प, अकाल, महामारी से भी सामाजिक संरचना में काफी परिवर्तन आ जाते हैं क्योंकि इन सब विपदाओं से स्वभाविक तंत्र अस्त-व्यस्त हो जाते हैं। इतना ही नहीं सामाजिक संबंधों पर भौगोलिक वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है।

(iii) प्रौद्योगिकी कारक :- इन कारकों की श्रेणी में उन कारकों को रखा जाता है जो नये - नये मशीन एवं प्रौद्योगिकी विकास से संबंधित होते हैं। आधुनिक युग को मशीन युग कहा जाता है क्योंकि इसमें पहले की तुलना में करीब - करीब प्रत्येक क्षेत्र में वैज्ञानिक मशीन का उपयोग किया जाता है। इन मशीनों के उपयोग होने से व्यक्तियों के सामाजिक संबधों में काफी बदलाव आ जाता है। ऑगबर्न, क्लिन, जानसन द्वारा किये गये अध्ययनों से

यह स्पष्ट हुआ है कि प्रौद्योगिकी कारकों में चार कारक महत्वपूर्ण बतलाये गए हैं :- जो निम्न हैं -

(a) उद्योगों में मशीन के उपयोग में वृद्धि - उद्योगों में मशीन का उपयोग बढ़ने से उद्योगों की कार्य क्षमता एवं उत्पादन में वृद्धि हुई है जिससे उनमें काम करने वाले कर्मचारियों की आय बढ़ी है और उनके सामाजिक संबंध में काफी सुधार आया है।

(b) संचार के साधनों का विकास - तकनीकी विकास के संचार के नये - नये साधनों जैसे, टेलीफोन, टेलीप्रिंटर, टेलीविजन, रेडियो, बेतार के तार, टेलिग्राफर, समाचार पत्र आदि के आ जाने से पहले की अपेक्षा सामाजिक संबंधों में महत्वपूर्ण परिवर्तन आये हैं। संचार के इन साधनों के विकास से सामाजिक संबंधों में अधिक निकटता आ गयी है तथा लोगों को एक-दूसरे को समझने में काफी मदद मिली है।

(c) यातायात के साधनों में वृद्धि :- प्रौद्योगिकी विकास के क्षेत्र में यातायात के साधनों में वृद्धि एक महत्वपूर्ण

कारक माना गया है। आजकल यातायात के आधुनिक साधनों जैसे, कार, बस, रेल, हवाई जहाज आदि के आ जाने से लोगों के आने-जाने की सुविधा तो हो ही गयी है साथ-ही-साथ राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय व्यापारों में काफी वृद्धि हो गयी है। इससे पुराने सामाजिक मूल्यों एवं विश्वासों में परिवर्तन आ गया है और क्रांतिकारी सामाजिक परिवर्तन हो गए हैं।

(ब) कृषि प्रविधियों में विकास — प्रौद्योगिकी विकास के कारण कृषि क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आये हैं। आधुनिक किसान इस नवीनतम कृषि प्रविधियों का उपयोग कर हरित क्रांति लाने में समर्थ हो सके हैं। इस हरित क्रांति के प्रभाव से उनकी आर्थिक समृद्धि में काफी वृद्धि हुई है और इनसे लोगों के सामाजिक संबंधों (Social relationship) पर बहुत ही अनुकूल प्रभाव पड़े हैं। इस तरह का संबंध अब पहले से अधिक उत्पन्न हो गया है।